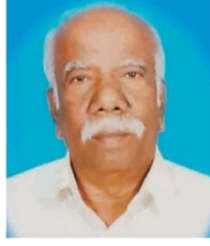




## विनम्र श्रद्धांजलि



### प्रो. तिप्पेस्वामी 1973 - 2006

आखर का उक्त अंक इस बार मैसूर विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर स्वर्गीय प्रो. तिप्पेस्वामी जी को समर्पित है। डॉ. तिप्पेस्वामी, मैसूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के एक अत्यंत सम्मानित प्रोफेसर और संवेदनशील अनुवादक थे। 1973 से 2006 तक उन्होंने न केवल शिक्षण किया, बल्कि असंख्य विद्यार्थियों के मन में भाषा और साहित्य के प्रति गहरी रुचि भी जागृत की। जनवरी 2026 में 80 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। यह केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं, बल्कि हिंदी और कन्नड़ साहित्य के बीच एक सशक्त सेतु का टूट जाना था। वे उन विरले विद्वानों में थे, जिन्होंने अनुवाद को केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि भाव और संस्कृति के आदान-प्रदान के रूप में देखा। उनके हिंदी-कन्नड़ अनुवादों ने दो भाषाओं के बीच आत्मीय संबंध स्थापित किया। केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होना उनके कार्य की सार्थकता का प्रमाण है। आज जब उन्हें स्मरण करते हैं, तो केवल एक प्राध्यापक नहीं, बल्कि एक मार्गदर्शक और एक सेतु-निर्माता की छवि सामने आती है, जिनकी कमी लंबे समय तक महसूस की जाती रहेगी।

आखर परिवार उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि देता है।